ISSN : 2249-7862 (Print) : 2455-877X (Online)
www.aureoleonline.in

नया सोच का आगारा कराता उपन्यास - अस्तित्व

Thara Benny
Research Scholar,
Nirmala College Muvattupuzha
* Email: tharabenny92@gmail.com

Abstract: समकालीन हिन्दी साहित्य में ट्रांसजेन्डर अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठा रहे हैं |विदेशों और भारत में भी उनके द्वारा आंदोलन चलाए गए |इसके परिणाम स्वरूप साहित्य में भी उसकी अनुगूँज सुनाई दे रही है |हिन्दी साहित्य को केंद्र में रखकर पहला उपन्यास नीरजा माधव का यमदीप लिखा गया है |इसके बाद साहित्य में ट्रांसजेन्डर को केंद्र में रखकर रचनाएं लिखी जाने लगीं |उच्चतम न्यायालय द्वारा 2014 को थर्ड जेन्डर में शामिल करते हुए उन्हें आरक्षण की छूट दी गई |उनके प्रति सोच में बदलाव आया |समाज में भी ट्रांसजेन्डर समाज से कई लोग मुख्यधारा से जुडने लगे | गिरिजा भारती का उपन्यास 'अस्तित्व 'मेंप्रीतम नामक ट्रांसजेन्डर है | पहले समाज द्वारा उनके प्रति उपेक्षा की भावना रखी जाती थी। लेकिन प्रीतम को उसके माता-पिता पढाते-लिखाते है ।अपने पैरों पर खडे होने का हौसला देते हैं|इस प्रकार साहित्य में भी बदलाव देखा जा सकता है ।आज वे ऊँचाइयों को छूने लगे हैं।कई ओहदे इनके द्वारा हाज़िल किए गए हैं ।अपने अधिकारों एवं अपने पहचान के लिए ट्रांसजेन्डर संघर्षरत है |आगामी दिनों में भी उनके लिए सुनहरा भविष्य कायम होगा |इसकी शुभकामना हम रखते हैं |आदिकाल में पुराणों में महाभारत रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथों में भी इनके प्रति आदर की भावना थी |उन्हें मँगलमुखी माने जाते थे और आज भी वे हमेशा के लिए मंगलमुखी बने रहें |इसलिए साहित्य द्वारा इनके लिए पहल की जा रही है |

Keywords-ट्रांसजेन्डर -थर्डजेन्डर -उच्चतम न्यायालय -आरक्षण

आजकल हिंदी साहित्य में ट्रांसजेंडर विमर्श खूब जोरों से चर्चा का विषय बन गया है। हिंदी साहित्य में ट्रांसजेंडर विमर्श का शुरुआत नीरजा माधव जी के उपन्यास यमदीप से माना जाता है। समाज हमेशा घृणा की दृष्टि से देखने वाले ट्रांसजेंडर लोगों के यथार्थ जीवन का अंकन इस उपन्यास में हम देख सकता है। हमारा समाज शारीरिक व मानसिक विकलांगों को भी अपनाता है और उनका पालन पोषण करता है, लेकिन लैंगिक विकलांगों को उनका परिवार अपनाने से कतराते हैं। उन्हें बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक घृणा,तिरस्कार, निराशा व अकेलापन का अंधकार ही मिलता है। वे भी हमारी तरह मनुष्य है।उन्हें भी खुलकर सांस लेने का अधिकार है। सभ्य समाज उनसे मनुष्य के रूप में जीने का अधिकार नहीं छीन नहीं सकते हैं।

" ट्रांसजेंडरों से अभिप्राय उन लोगों से है जिनके जननांग पूर्ण रूप से विकसित ना हो पाए हो अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग जिनका जन्म तो पुरुष तन में हुआ, किंतु उनका मन, स्वभाव, हाव - भाव चाल चलन आदि स्त्रीयों की तरह हो या जो स्त्री रूप में जन्में हैं किन्तु जिनमें पुरुष जैसी भाव हो। "

संवेदनशील साहित्यकारों ने विभिन्न साहित्यिक विधाओं द्वारा जैसे , कविता, कहानी, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा आदि अनेक विधाओं में इन लोगों के जीवन संघर्ष और उनकी संवेदना को शब्दों में पिरोया है। इस दौर में नीरजा माधव का यमदीप, महेंद्र भीष्म का मैं पायल, किन्नर कथा, सुभाष अखिल का दरमियाना प्रदीप सौरभ का तीसरी ताली राजेश मालिक का आधा आदमी चित्रा मुद्गल का पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा, भगवंत अनमोल का जिंदगी 50-50 गिरजा भारती का अस्तित्व, हरभजन सिंह, मेहरोत्रा का ए जिंदगी, तुझे सलाम आदि।

2018 में प्रकाशित गिरिजा भारती का अस्तित्व उपन्यास एक नया सोच का किरण देता है। इस उपन्यास में गिरिजा भारती एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति का संभावना के प्रति हमारा ध्यान खींचता है। मनोविज्ञान में सोच को इस प्रकार परिभाषित किया गया है कि "सोच मोटे तौर पर दुनिया में किसी व्यक्ति के सफलता जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण और रोजमर्रा की समस्याओं को हल करने की क्षमता ऊर्जा के खर्च के साथ अधिकतम उत्पादकता तक पहुंचने को निर्धारित करती है। इस प्रकार देखेंगे तो ट्रांसजेंडर लोगों को और हमारा समाज को भी एक नया दिशा प्रदान करने वाला उपन्यास है अस्तित्व।

'अस्तित्व' युवा लेखिका गिरिजा भारती का प्रथम उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास एक थर्ड जेंडर के जीवन की गाथा है। इस उपन्यास का कथानक एक मध्यमवर्गीय परिवार के इर्द-गिर्द बुना गया है। विवाह के चार वर्ष बाद वर्मा जी एवं उनकी पत्नी सुधा को एक कन्यारत्न की प्राप्ति होती है। बेटी के जन्म की खुशी एवं उत्साह उस समय ठंडा हो जाता है जब सुधा, वर्मा जी को बताती हैं कि उनकी बेटी वास्तव में एक किन्नर है, "...जब बीवी ने बताया कि बेटी एक किन्नर है तो वर्मा जी को लगा मानों किसी ने उनके कानों में शीशा पिघलाकर डाल दिया हो और वह अभी यह खबर सुनकर बेहोश हो जाएँगे।" सुधा को जीवनपर्यन्त अपनी किन्नर बेटी को किन्नरों के ले जाने का भय सताता है। अक्सर उसे ऐसे स्वप्न आते हैं जिनमें वह किन्नरों को अपनी बेटी को छीनकर ले जाते हुए देखती है, "...मैंने सपना देखा कि किन्नर मेरी बच्ची को मुझसे छीनकर ले जा रहे हैं।" इसलिए वह यह बात किसी को नहीं बताती की उसकी बेटी किन्नर है और उसका लालन-पालन अपने अलावा किसी को नहीं करने देती। यहाँ तक कि वह अपनी माँ से भी यह बात छुपाती है। एक दिन उसकी माँ को सच्चाई पता लगती है तो वह बहुत दुखी होती है तथा अपनी माँ से निवेदन करती है कि वह यह बात किसी को भी न बताएँ वरना किन्नर उसकी बेटी को उसके पास नहीं रहने देंगे और अपने साथ ले जाएँगे। उसे इस बात की चिन्ता होती है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था किस प्रकार की है जिसमें कुत्तों तक को लोग अपने साथ रखते हैं, उनकी एक संतान की तरह देख-रेख करते हैं किन्तु किन्नर का नाम

सुनते ही उससे घृणा करते हैं तथा समाज से बहिष्कृत कर देते हैं। वह अपनी माँ से कहती है, ''मुझे यह समझ नहीं आता माँ, लोग कुत्ते पालते हैं। उसको अच्छे-अच्छे साबुन, शैंपू से नहलाते हैं। उसके कितना प्यार और इज्जत देते हैं। कितने प्यार से उसको खाना खिलाते हैं, दूध पिलाते हैं, गाड़ियों में बिठाते हैं, उसको बिस्तर पर सुलाते हैं। वो तो एक कुत्ता है, जानवर है। जब आप उसे जीने का अधिकार देते हैं तो एक किन्नर को क्यों नहीं?'' वह अपनी माँ से कहती है कि वह अपनी बेटी के अधिकार के लिए इस समाज से लड़ेगी, ''मैं अपनी बेटी के हक के लिए इस पूरे समाज से लड़ लूँगी। पर माँ मुझ पर दया कर। किसी को मेरी बेटी का राज मत बताना।''कथा इसी प्रकार आगे बढ़ती है। सुधा अपनी किन्नर बेटी का नाम 'प्रीत' रखती है और उसके पालन-पोषण एवं पढ़ाई-लिखाई का दायित्व स्वयं सँभालती है। अपने पति से कहकर उनका तबादला दिल्ली करवा लेती है जिससे उसे अपनी किन्नर बेटी की परवरिश में कोई समस्या न आए। यद्यपि वर्मा जी की माँ को यह बात नागवार गुजरती कि सुधा अपनी बड़ी बेटी को किसी को भी हाथ नहीं लगाने देती और अक्सर वह उसे ताने देने लगती, बेटी पैदा की हो तो हाथ नहीं लगाने देती। अगर बेटा पैदा करती तो चेहरा भी नहीं दिखाती। पर्दे में रखती| दिल्ली आने के कुछ ही वर्षों में वह एक बेटे और एक बेटी को जन्म देती है और इस बात से निशि्ंचत हो जाती है कि अब वह प्रीत की देखभाल अच्छी तरह से कर सकती है क्योंकि उसकी सास उसके दोनों बच्चों की देख-रेख करती रहेंगी।

समय के साथ बच्चे बड़े होने लगते हैं। स्कूल जाने लगते हैं। प्रीत एक होनहार छात्रा के रूप में उभरती है। वह पढ़ी-लिखी व समझदार होने के साथ-साथ संवेदनशील भी है। बड़े होते हुए ही उसे इस बात का पता चल जाता है कि वह एक आम लड़की नहीं बल्कि एक किन्नर है, अब वह पूरी तरह समझ गयी थी कि वह एक आम लड़की नहीं है। वह एक किन्नर है। इसका प्रीत को बहुत बड़ा धक्का लगा। वह खोई-खोई-सी रहने लगी। कभी मन करता तो एकदम पढ़ने बैठ जाती तो कभी बाहर घूमने निकल जाती| समाज को देखते समझते हुए वह हर परिस्थिति का सामना करने को तैयार हो जाती है। वह समाज के झूठे नियमों को समझ जाती है, प्रीत समझ चुकी थी कि इस समाज में कोई नियम नहीं, समाज खुद नियम बनाता है और उसे जो भी खुद कमजोर लगता है। उसे समाज की बलि वेदी पर चढ़ा देता है। वह गंभीर विचार विमर्श करती है और अपनी माँ से कहती है, ''वह सोचती है, मैं इतनी कमजोर नहीं। मैं अपनी पहचान खुद बनाऊँगी।....उसने एक दिन अपनी माँ को अकेले देखकर कहा। माँ आप मेरे बारे में सोचकर चिन्ता मत किया करो। कोई कभी नहीं समझ पाएगा कि मुझमें क्या कमी है और अगर मुझमें कोई कमी है भी तो माँ लोगों को क्या फर्क पड़ता है।''.....

अब बच्चे युवा हो गए हैं। सास को उनके विवाह की चिन्ता होती है। इस कारण पर में क्लेश रहने लगता है। सुधा चाहती है कि प्रीत पड़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो क्योंकि उसे इस समाज में अपना अस्तित्त्व तलाशना है। घटनाक्रम नाटकीय ढंग से आगे बढ़ता है और प्रीत से पहले उसकी छोटी बहन रीत का विवाह होता है यद्यपि परिवार और रिश्तेदारों में इस बात को लेकर भी बहुत हो हल्ला होता है कि बड़ी बेटी से पहले छोटी का विवाह क्यों,अरे, कलयुग है, कहीं ऐसा होता है कि बड़ी बेटी घर बेटी रहे और छोटी बेटी की शादी हो जाए

लोगों का डर, न समाज की परवाह| लेकिन और उसके पति सारी स्थितियों को हुए छोटी बेटी रीत का विवाह कर देते है प्रीत अपनी पढ़ाई पूरी करके नौकरी करने लगती है। वर्मा जी आर्थिक रूप से इतने समृद्ध नहीं कि बेटे को उच्च शिक्षा के लिए बाहर भेज पाएँ। ऐसे समय में प्रीत उनकी मदद करती है और अपने भाई को उच्च शिक्षा के लिए बाहर भेजती है। एक अच्छी नौकरी के बाद बेटा घर वापस लौटता है और उसका विवाह एक उच्चकुलीन लड़की से होता है जो एक डाक्टर है। उसे पता चल जाता है कि प्रीत एक किन्नर है तो वह इस बात का विरोध करती है। अपने साथ इस प्रकार का व्यवहार देखकर प्रीत अक्सर दुखी हो उड़ती है और मन ही मन सोचने लगती है, क्या किन्नर को सामान्य जीवन जीने का कोई अधिकार नहीं है। क्या उसे परिवार व समाज में हिकारत से देखा जाना चाहिए। एक छोटी-सी कमी पता चलते ही उसे यह समाज अपने परिवार से अलग कर देगा प्रीत के पिता चाहते हैं कि प्रीत के लिए एक घर बनवा दें जबकि उनकी बहू चाहती है कि उसके लिए एक क्लीनिक बनवाया जाए। इसी बात को लेकर पारिवारिक कलह होती है और वर्मा जी की डाक्टर बहू अपने पति शुभम् को लेकर अलग रहने लगती है। कथा में एक नया मोड़ तब आता है जब प्रीत की माँ प्रीत से शादी करने को कहती है। क्योंकि उसे लगता है कि उनके न रहने पर प्रीत के भविष्य का क्या होगा? क्या सच्चाई सामने आने पर यह समाज उसे चैन से रहने देगा? अतःवह निर्णय लेती है कि प्रीत का विवाह हो जाए जिससे वह अपनी ज़िन्दगी जी सके किन्तु प्रीत यह शर्त रखती है। कि वह अपनी सच्चाई बताकर ही विवाह करेगी। एक-दो लड़के देखे जाते हैं लेकिन प्रीत की सच्चाई जानकर सब पीछे हट जाते हैं|बहुत प्रयासों से के बाद उन्हें एक ऐसा लड़का मिला जो स्वयं किन्नर था। उसके माता-पिता से बात करके तथा प्रीत व उस लड़के अमन की आपसी सहमति से दोनों का विवाह हो गया। कुछ समय बाद प्रीत और उसके पति अमन ने अनाथालय से एक लड़की को गोद ले लिया। अब उनका परिवार पूर्ण हो चुका था और उन्हें अपना अस्तित्त्व प्रतीत होने लगता है, प्रीत और अमन को लगा कि आज भी उनका अस्तित्त्व स्थिर है। यहीं पर उपन्यास का आदर्शवादी अंत हो जाता है।

वर्तमान समय में किन्नर पर अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं। ऐसे में प्रस्तुत उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास सिद्ध होगा क्योंकि इसमें केवल किन्नर की संघर्ष गाथा ही नहीं अपितु उसकी माँ के रूप में नारी की संघर्ष गाथा भी है। उपन्यास की सबसे महत्त्वपूर्ण बात एक माँ का अपनी किन्नर बच्ची के भविष्य के प्रति चिन्तित रहने, समाज में उसकी पहचान बनाने तथा उसके अस्तित्त्व के लिए अपने घर-परिवार, सगे-संबंधी और समाज से लड़ने की जो भावना मुखर हुई है वह निश्चित रूप से सराहनीय है। लेखिका ने नारी के प्रति अपनी सकारात्मक दृष्टि के साथ-साथ समाज के सामने एक आदर्श भी प्रस्तुत किया है कि माँ के लिए उसकी संतान केवल संतान होती है चाहे वह लड़का हो, लड़की हो या फिर ट्रानसजेंडर। माँ के हृदय का मर्मस्पर्शी चित्रण करता यह उपन्यास रोचकता, कलात्मकता और विशिष्ट शैली के कारण हिन्दी औपन्यासिक संसार में प्रशंसित होगा।

ग्रंथ सूची

1. आस्तित्व -गिरिजा भारती -विकास प्रकाशन कानपूर ,2018
2. हिन्दी साहित्य में थर्ड जेन्डर विमर्श -डॉ पायल लिलहारे ,डॉ श्याम मोहन पटेल -वान्या पब्लिकैशन कानपूर -2020